कुमार जीवन - 27

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है सदा प्युरिटी की पर्सनेलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को प्युरिटी की तरफ आकर्षित करेगी। और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी की रायल्टी देने से छुड़ायेगी। रायल्टी के दोनों ही अर्थ होते हैं। इसी रायल्टी के अनुसार भविष्य रायल फैमली में आ सकेंगे।** तो चेक करो ऐसी रॉयल्टी और पर्सनेलिटी जीवन में अपनाई है? यूथ ग्रुप पर्सनेलिटी को ज़्यादा बनाती है ना! तो अपनी रूहानी पर्सनेलिटी अविनाशी पर्सनेलिटी अपनाई है? जो भी देखे हरेक ब्रह्माकुमार और कुमारी से यह पर्सनेलिटी अनुभव करे। शरीर की पर्सनेलिटी वह तो आत्माओं को देहभान में लाती है और **प्युरिटी की पर्सनेलिटी देही अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है।**

➳ _ ➳ तो विशेष कुमार ग्रुप को अब क्या सेवा करनी है? **एक तो अपने जीवन परिवर्तन द्वारा आत्माओं की सेवा, अपने जीवन के द्वारा आत्माओं को जीयदान देना। स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृत्ति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनेलिटी, रूहानी रायल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनेलिटी की ओर आकर्षित हों। सदा बाप का परिचय देने वाले वा बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दर्पण बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। किसने बनाया? बनाने वाला सदा दिखाई दे। जब भी कोई वन्डरफुल वस्तु को देखते हैं वा वन्डरफुल परिवर्तन देखते हैं तो सबके मन से, मुख से यही आवाज़ निकलता है कि किसने बनाई वा यह परिवर्तन कैसे हुआ। किस द्वारा हुआ।** यह तो जानते हो ना। **इतना बड़ा परिवर्तन जो कौड़ी से हीरा बन जाए तो सबके मन में बनाने वाला स्वत: ही याद आयेगा।**

➳ _ ➳ कुमार ग्रुप भाग-दौड़ बहुत करता है। सेवा में भी बहुत भाग दौड़ करते हो ना। लेकिन सेवा के क्षेत्र में भाग दौड़ करते 'बैलेन्स' रखते हो? स्व सेवा और सर्व की सेवा दोनों का बैलेन्स सदा रहता है। बैलेन्स नहीं होगा तो सेवा की भाग दौड़ में माया भी बुद्धि की भाग दौड़ करा देती है। बैलेन्स से कमाल होती है। **बैलेन्स रखने वाले का परिणाम सेवा में भी कमाल होगी। नहीं तो बाहरमुखता के कारण कमाल के बजाए अपने वा दूसरों के भाव स्वभाव की धमाल में आ जाते हो।** तो **सदा सर्व की सेवा के साथ-साथ पहले स्व सेवा आवश्यक है। यह बैलेन्स सदा स्व में और सेवा में उन्नति को प्राप्त कराता रहेगा। (24-4-1983)**

➢➢ प्यूरिटी की पर्सनालिटी

➳ _ ➳ सांसरिक दुनिया में पर्सनालिटी अर्थात

→ खुद को वह दिखाना

- जो आप नहीं हैं

➳ _ ➳ रूहानी दुनिया में पर्सनालिटी अर्थात

→ आत्मा के मूल गुणों को प्रतक्ष्य करना

➢➢ स्व परिवर्तन द्वारा दूसरो को परिवर्तन करना... बिना कुछ बोले

➳ _ ➳ आपकी धारणाओ को देखकर दुसरे स्वतः ही धारणाएं करने लगें

➳ _ ➳ आपके चेहरे में बाबा की झलक दिखाई दे

➳ _ ➳ आपके पास बैठकर शांति और शक्ति का अनुभव होने लगे

➢➢ रूहानी वृत्ति अर्थात

➳ _ ➳ मैं रूह हूँ

➳ _ ➳ बात कर रही हूँ रूह से

➳ _ ➳ देख रही हूँ रूह को

➳ _ ➳ सदैव सुप्रीम रूह की छत्रछाया के नीचे... कंबाइंड अवस्था

➳ _ ➳ एक संकल्प भी श्रीमत के विरुद्ध नहीं

➳ _ ➳ मैं निमित

➳ _ ➳ सदैव जी हुज़ूर करना

➢➢ रूहानी दृष्टि अर्थात

➳ _ ➳ बाबा मेरी दृष्टि में ... और मैं उसकी दृष्टि में

➳ _ ➳ देखते हुए भी...

→ देह न दिखे...

→ देह की दुनिया की वस्तु न दिखे....

→ देह की दुनिया के व्यक्ति न दिखे

➢➢ रूहानी कृत्ति अर्थात

➳ _ ➳ बाबा के यग्य में तन मन धन से की गयी सेवा

➢➢ रूहानी वाणी अर्थात

➳ _ ➳ मुख पर सदैव बाबा बाबा की धुन लगे रहे

➳ _ ➳ “मैं कर रहा हूँ” - ऐसे शब्द न हों

→ करनहार की स्मृति से करावनहार को नहीं भूल जाओ

→ निमितपन की स्मृति से निमित बनाने वाले को नहीं भूल जाओ